Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 1 | (Jan – Mar 2026)

मिथिला के लोकगीतों का अवलोकन

प्रवीण कुमार [1], प्रो. नीरा चौधरी [2]
[1]शोधार्थी, संगीत विभाग, मगध महिला कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना।
[2] प्रोफेसर, संगीत विभाग, मगध महिला कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना।

सारांश

हिमालय के पादप्रदेश में कोसी से पश्चिम, गंडक से पूर्व और गंगा से उत्तर विदेह जनपद और राजधानी नगर 'मिथिला' आजकल एक सांस्कृतिक जनपद के रूप में अवशिष्ट है। इस भूभाग की प्राकृतिक सुषमा, ऐतिहासिक गौरव एवं सांस्कृतिक अंतर्धारा से समृद्ध है। यहाँ के जीवन में लौकिक एवं वैदिक संस्कृति का समाहार लोकवेद में दृष्टव्य है। 'लोकगीत' लोक के गीत हैं, जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा समाज अपनाता है। मिथिला विश्व के महान सांस्कृतिक धरोहर क्षेत्रों में से एक प्रमुख क्षेत्र है। यहाँ की धरती खाद्यान्न के लिए उर्वरा तो है ही, संतान-गर्भा भी है। इसका सांस्कृतिक, खासकर शैक्षणिक इतिहास हजारों साल का है। इस विद्या-क्षेत्र का गौरव वेदों में वर्णित है। जनक, सीता, याज्ञवल्क्य, कपिल, पक्षधर मिश्र, चण्डेश्वर, गार्गी, मैत्रेयी, लखिमादेई और विद्यापति जैसे संतानों को जन्म देने का गौरव इस धरा को है, जिन्होंने अपनी कृतियों से विश्व को हमेशा-हमेशा के लिए ऋणी बना दिया। विद्यानुरागी यह क्षेत्र सदा से रहा है। विद्वान और सामान्य जनता के बीच जैसा तारतम्य और आपसी समझदारी यहाँ है, शायद ही कहीं मिले। यहाँ के रीति-रिवाज में लोक और शास्त्र का बेजोड़ संगम देखने को मिलता है।

मुख्य शब्द: मिथिला, साहित्य, विदेह, संस्कृति, जनक, समाज।

मूल आलेख

मिथिला की अपनी सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा रही है। अतः इस कारण से भारतवर्ष की सभ्यता और संस्कृति की प्राचीनता एवं परंपरा को सुरक्षित रखने में मिथिला का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। मैथिली लोकगीत मैथिली सभ्यता और संस्कृति की धरोहर हैं। डॉ. अणिमा सिंह अपने मैथिली लोकगीत संकलन में कहती हैं कि-वे गीत ही वास्तव में लोकगीत माने जा सकते हैं, जो मुख्यतः लोक-मध्य प्रचलित हों तथा लोक-निर्मित हों।[1] यदि किसी विशेष अवधि के लोकगीत कालांतर में शिष्ट साहित्य के मध्य स्थान प्राप्त कर लें और इन गीतों का संबंध लोक-जीवन से टूट जाए, तो ऐसे लोकगीतों को लोकगीत की सीमा से बाहर किया जा सकता है। लोकगीतों का केवल मौखिक प्रचार ही होता आया है, इनको लिखकर रखने की परिपाटी नहीं रही है। लोकगीत एक कंठ से दूसरे कंठ और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तथा एक युग से दूसरे युग तक मौखिक रूप से ही प्रवाहमान रहे हैं, किंतु वर्तमान में आकर इसके संकलन की ओर साहित्यकारों का ध्यान गया है। मैथिली लोकगीतों के संग्रह में डॉ. अणिमा सिंह का 'मैथिली लोकगीत', संपादक इंद्रकांत झा का 'मैथिली व्यवहार गीत संग्रह', श्रीमती उमा देवी द्वारा संकलित तथा श्री गोपीकांत झा 'उमापति' द्वारा संपादित 'मैथिली लोकगीत', स्वर्गीय भोला झा का 'मिथिला गीत संग्रह', स्वर्गीय सीताराम झा का 'मैथिली गीतांजलि', श्री लोकनाथ मिश्र का 'मैथिली में व्यवहार गीत', श्रीमती कामेश्वरी देवी का 'मिथिला संस्कार गीत' और विभूति आनंद व ज्योत्सना आनंद का 'गीत नाद' उल्लेख करना उचित है।[2]

मैथिली लोकगीतों में नौ रसों में से प्रत्येक रस से युक्त गीत प्राप्त होते हैं। विवाह संस्कार, कजली, मलार, झूमर, बारहमासा, रास, बटगमनी आदि गीत श्रृंगार रस से संबंधित हैं। खेल संबंधी गीत, शिशु गीत, डहकन, नचारी आदि में हास्य रस का पुट मिलता है। करुण रस की सृष्टि में तो मैथिली लोकगीतकार अत्यंत सफल हैं; इसके अंतर्गत समदाउन, मृत्यु गीत, ताजिया

संबंधित गीत आदि आते हैं। असुरों पर कुपित, संहार-निरत क्रोधदीप्त काली के स्वरूप का वर्णन जिन लोकगीतों में मिलता है, वे रौद्र रस का उदाहरण हैं। गोसाउनि के गीतों में माँ काली और माता दुर्गा संबंधी कुछ गीत ऐसे भी मिलते हैं, जो देवी के युद्धवीर तथा शत्रुमर्दन रूप का सुंदर चित्रण करते हैं; ऐसे गीतों में वीर रस की प्रधानता होती है।[3] शिव की बारात में आए विभिन्न आकार-प्रकार के भूत-प्रेतों तथा उनके क्रियाकलापों के वर्णन में वीभत्स रस देखने को मिलता है। महादेव की विचित्र वेशभूषा देखकर विस्मित लोगों के वर्णन में अद्भुत रस का समावेश है। देवी-देवता संबंधित गीतों, भजनों आदि में शांत रस का सुंदर चित्रण पाया जाता है।

मैथिली लोकगीतों का वर्गीकरण

मिथिला और मैथिली में लोकगीतों का अक्षय भंडार है, जिसे विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न रूपों में, विभिन्न विषयों और संदर्भों के आधार पर विभाजित किया है। किंतु बोधगम्यता में सहजता के लिए मैथिली लोकगीतों को उनके उद्देश्य के आधार पर निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है- संस्कार गीत, पर्वगीत, जाति-संबंधी गीत, पेशागीत, बालक्रीड़ा गीत, भक्तिपरक या देवी-देवता संबंधी मैथिली लोकगीत, ऋतुगीत, गाथा गीत, व्रत-त्योहार संबंधी गीत, विविध गीत।

1. **संस्कार गीत**

संस्कार गीतों का संबंध मुख्यतः लौकिक अनुष्ठानों से है। इन संस्कार गीतों के मुख्यतः दो स्वरूप हैं-

i. शास्त्रीय गीत, ii. लौकिक गीत

संस्कार गीत सभी जातियों व जनजातियों द्वारा जन्म से लेकर मरण तक सभी प्रमुख अवसरों पर गाए जाते हैं। यह गीत हर्ष, उल्लास और शोक से भरे होते हैं, जैसे-जन्म, मुंडन, विवाह, गौना, द्विरागमन आदि। जन्म के समय सोहर, मुंडन के समय खेलौना, विवाह के समय विदाई आदि। बिहार में पुत्र-जन्म के अवसर पर 'सोहर गीत' गाए जाते हैं। भोजपुर तथा मगध क्षेत्र में इस अवसर पर पँवड़िया नाच होता है। पँवड़िया लोग बच्चे के जन्म की बधाई गीतों के द्वारा देते हैं और बधावा माँगते हैं।[4] संस्कार गीतों में सर्वाधिक गीत विवाह गीतों के अंतर्गत आते हैं। इन गीतों में शिव-विवाह एवं राम-विवाह के प्रसंग वर्णित हैं। बिहार में 'डोमकछ' एक नाट्य लोकसंगीत है, जिसका गायन विवाह के अवसरों पर वर-पक्ष की स्त्रियों के सम्मिलित सहयोग से होता है। मिथिला क्षेत्र में पुत्री की विदाई के समय विशिष्ट शैली का गीत गाया जाता है, जिसे "समदाउन, समदावन, समदन" के नाम से जाना जाता है।

2. **पर्वगीत**

मिथिला में मुख्य रूप से दीपावली, छठ, तीज, नागपंचमी, गोधन, निहुरा, मधुश्रावणी, रामनवमी, कृष्णाष्टमी आदि सभी त्योहारों को राज्य में उल्लास से मनाया जाता है। छठ पर्व मिथिला एवं समस्त बिहार के प्रमुख त्योहारों में से एक है, जिसमें सूर्य के स्वरूप की पूजा की जाती है।

3. **जाति संबंधी गीत**

भारत की सामाजिक व्यवस्था में हर वर्ग एवं जातियों का विशेष महत्त्व है। प्रत्येक जातियों के अलग-अलग कुलदेवता हैं, जिनकी वीरतापूर्ण गाथाओं से युक्त लोकगीत जातीय गीतों की श्रेणी में आते हैं।[5] प्रत्येक जाति के गीत अलग-अलग विशिष्टताओं से युक्त हैं। अहीर, दुसाध, चमार, कहार, धोबी और लुहार-सबके अपने-अपने जाति संबंधी गीत होते हैं। जैसे-बिरहा और लोरिकी गीत अहीरों द्वारा गाए जाते हैं।

4. श्रम संबंधी गीत

मिथिला के गाँवों में ऐसे बहुतेरे ग्रामीण दोहे एवं पंक्तियाँ हैं, जो लोगों को हवा की रुख, वर्षा, सूर्य की रोशनी, पशु-पक्षियों की आवाज, अर्थात् मनुष्य का उसके प्रकृति के साथ संबंध के आधार पर अच्छे और बुरे फसल के बारे में पूर्वानुमान करने में मदद करते हैं। उनमें से अधिकांश दोहे एवं पद दो लोक कृषि वैज्ञानिक डाक एवं घाघ द्वारा रचित बताए जाते हैं। ऐसे गीतों को श्रमसाध्य कार्य करते समय श्रम-परिहारार्थ उद्देश्य से मैथिल ललनाओं द्वारा गाया जाता है। इसके अंतर्गत लगनी, रोपनी, चरखा कातते समय के गीत, ओखली कूटते समय के गीत, गेहूँ पीसते समय के गीत, धान कूटते समय के गीत आदि आते हैं।[6]

5. बालक्रीड़ा गीत

बाल-जीवन से संबद्ध गीतों को बालगीत या शिशु गीत कहते हैं। जैसे-अटकन-मटकन, चोरा-मुक्की, अट्टा-पट्टा, कबड्डी गीत, लोरी तथा बच्चों के उबटन लगाने के गीत ‘अपटोनी गीत’ हैं।

6. भक्तिपरक या देवी-देवता संबंधी मैथिली लोकगीत

मैथिल अपनी भक्ति भावना, धार्मिक संस्कार और धर्म के प्रचार में विद्या के माध्यम से योगदान के लिए विख्यात हैं। अतः यह स्वाभाविक है कि यहाँ के लोकगीतों में भक्ति गीत का एक महत्वपूर्ण स्थान बना हुआ है। ऐसे लोकगीतों में गोसाउनि गीत सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिसमें भगवती की स्तुति की जाती है। साथ ही उनके स्मरण के संग-संग भक्त सांसारिक क्लेश को दूर करने की प्रार्थना करते हैं।[7] इसके अतिरिक्त देवी-देवता संबंधी गीतों में हनुमान गीत, धर्मराज गीत, गणेशजी से संबंधित गीत, कमला माई से संबंधित गीत, गंगाजी से संबंधित गीत, ब्रह्मा गीत, महेशवाणी (जिसके अंतर्गत शंकर जी के दांपत्य जीवन की चर्चा रहती है) तथा नचारी (इनमें भी शिव-विषयक गीत होते हैं, किंतु इनका भाव शिव-भक्ति होता है), ताजिया संबंधी गीत आदि आते हैं।

7. ऋतु गीत या ऋतु संबंधी गीत

प्रायः प्रत्येक भाषा के साहित्य में ऋतुगीत का स्थान महत्वपूर्ण होता है। मैथिली में भी ऋतुगीत बहुत प्रसिद्ध हैं, जिनमें ऋतुओं से संबंधित गीत आते हैं। इसके अंतर्गत होली के अवसर पर गाए जाने वाले फागु, वसंत, कजरी, चैतारी, चौमासा, छहमासा, बारहमासा आदि आते हैं। ऋतु संबंधी गीतों में मिथिला के किसानों की दरिद्रता का वर्णन यथार्थपरक रूप से देखने को मिलता है। इन गीतों में संयोग-वियोग श्रृंगार का मधुर और सरस चित्रण देखने को मिलता है।

8. गाथा गीत

ये गीत भारतीय वीर नायकों की वीरता की स्मृति में गाए जाने वाले गीत हैं। बुंदेलखंड में जिस प्रकार से आल्हा गाया जाता है, उसी प्रकार मिथिला में वीर रस की गाथाओं को गीतबद्ध करने की परंपरा रही है। इन गाथा गीतों में करुण, वात्सल्य और श्रृंगार रस का भी समावेश होता है।[8] यहाँ इन गाथा गीतों के कुछ शीर्षक हैं, जिन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता है। जैसे-नयका बंजारा, मीरायन, राजा हरिचन (हरिश्चंद्र), लोरिकायन, दीना भदरी, चूनाचार, छतरी चौहान, धुधली-घटमा, विजयमल, सहलेस, राजा विक्रमादित्य, हिरणी-बिरणी, कुंवर ब्रजभार, अमर सिंह बरिया।

9. व्रत और उत्सव विशेष संबंधी गीत

ऐसे गीतों के अंतर्गत अवसर विशेष पर गाए जाने वाले गीतों को रखा जा सकता है, जिसके अंतर्गत त्योहारों के अवसर पर गाए जाने वाले गीत जैसे कि छठ गीत, सामा-चकेवा गीत, बरसाइत गीत, मधुश्रावणी गीत, नागपंचमी गीत, अनंत चतुर्दशी

गीत आदि आते हैं। होली के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों को फागु कहा जाता है, सुबह गाए जाने वाले गीतों को पराती कहते हैं तथा शाम में गाए जाने वाले गीतों को मलार कहते हैं।[9] रास्ते में चलते-चलते गाए जाने वाले गीत बटगमनी, जन्म के अवसर पर गाए जाने वाले गीत सोहर तथा राधा-कृष्ण के नोक-झोंक से संबंधित गीत को ग्वालरी कहा जाता है।

10. अन्य विविध गीत

ऐसे गीतों के अंतर्गत उपरोक्त वर्गीकरण से वंचित लोकगीतों को रखा जा सकता है। साथ ही उपरोक्त वर्गीकरण में आने वाले कई गीत भी इस वर्गीकरण के अंतर्गत रखे जा सकते हैं। इनके अंतर्गत प्रमुख गीत हैं-झूमर, तिरहुत, आरती, मृत्यु गीत, तंत्र-मंत्र संबंधी गीत आदि।

निष्कर्ष:

मानव जीवन में लोकगीत का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसके अंतर्गत विशेषकर संस्कार गीत का गायन अधिक किया जाता है। मैथिली साहित्य का मध्यकाल मैथिली साहित्य के लिए स्वर्ण युग था। संस्कार गीत अथाह हैं, समुद्र के समान हैं। हमारे मिथिलांचल में जन्म से मृत्यु तक संस्कार जुड़े हैं। साधारणतः मिथिला के ग्रामीण जीवन में जन्म के पहले से लेकर मृत्यु तक संस्कार गीत व्याप्त रहते हैं। बच्चे के जन्म पर सोहर गाकर प्रसन्नता प्रकट की जाती है। दादी माँ बच्चे को लोरी सुनाकर सुलाती है। खेलने-कूदने के समय भी गीत गाए जाते हैं। युवकवृंद प्रेमपूर्वक गीत गाकर स्नेह की अभिव्यक्ति करते हैं एवं प्रेमिका को रिझाते हैं। विवाह के प्रत्येक विधि-विधान के समय स्त्रीगण गीत गाकर सुखद वातावरण उत्पन्न करती हैं तथा हास-परिहास करती हैं। मैथिली संस्कार गीत अपने आप में लोकजीवन के संस्कार, आचार-विचार, विधि एवं व्यवहार को समेटे हुए हैं। लोकगीत लोक के बीच स्नेह, भ्रातृत्व, सामूहिक जीवन का उल्लास और समरसता को बढ़ाते हैं। संस्कार गीत संस्कारों को सहेज कर रखते हैं। विद्यापति के गीतों में संस्कार है, रस है- "तोड़वय हम बेलपात लिखवय विरह के बात।" हमें अपने संस्कार नहीं छोड़ने चाहिए। मिथिला में संस्कार गीत गाने की ऐसी परंपरा बन गई है कि ये कभी समाप्त ही नहीं हो सकते हैं। बिना संस्कार गीत के गायन के कोई भी संस्कार पूर्ण ही नहीं हो सकता। निसंदेह मिथिला संस्कार गीत परंपरा की प्राचीनता एवं नैसर्गिकता अप्रतिम है, जो आज भी अपनी पहचान, लोकप्रियता तथा वजूद को कायम रखे हुए है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, डॉ. अणिमा, मैथिली लोकगीत संकलन, पृष्ठ सं. 16
2. नारायण, डॉ. पुष्पम, मिथिला की लोकगाथाएं, पृष्ठ सं. 07
3. झा, मोहन आनंद, मैथिली संस्कृति परम्परा में लोकगीत, पृष्ठ सं. 36
4. वहीं, पृष्ठ सं. 56
5. नारायण, डॉ. पुष्पम, मिथिला की लोकगाथाएं, पृष्ठ सं. 19
6. झा, परमेश्वर, मिथिला तत्त्व विमर्श, पृष्ठ सं. 117
7. सिंह, अणिमा, मैथिली संस्कार गीत, पृष्ठ सं. 52
8. वही, पृष्ठ सं. 53
9. शर्मा, राधा वल्लभ, मैथिली संस्कार गीत, पृष्ठ सं. 93